© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 02 | April - June 2023

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पारिवारिक संरचना का उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव – एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ राहुलकांत
प्राचार्य
ए. एम. कॉलेज ऑफ एजुकेशन
माजरा श्योराज, रेवाड़ी

सारांश

बालक को सभ्य मानव बनाने का कार्य बच्चे के पैदा होते ही शुरू हो जाता है, स्वामी दयानन्द जी कहते है कि बच्चा माँ के गर्भ से ही शिक्षा ग्रहण करनी शुरू कर देता है तथा जीवन पर्यन्त सीखता रहता है। मानव जीवन की बगिया की शोभा शिक्षा के बिना बदसूरत दिखाई पड़ती है। आँखें होते हुए भी बिना शिक्षा के मानव अंधा प्रतीत होता है। वह सभी के साथ पशुओं तथा दानवों जैसा व्यवहार करता है अर्थात् शिक्षा वह उजाला है जिसके द्वारा बालक की समस्त मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, अध्यात्मिक तथा नैतिक शक्तियों का विकास होता है, जिससे बच्चा अपने देश की संस्कृति तथा सभ्यता को बनाए रखते हुए, अपने चरित्र का विकास करते हुए, समाज का सुसंगठित नागरिक बनकर समाज का विकास करने के लिए प्रेरित होता है। जिस तरह शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे विद्वान, चरित्रवान तथा बलशाली बनाती है उसी प्रकार समाज की उन्नति के लिए भी शिक्षा भागीदार होती है, क्योंकि शिक्षा ही वह साधन है जो समाज के रीति रिवाज, संस्कृति, उच्च आदर्शों, परम्पराओं को भावी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करती है और बालक के मन में देश–प्रेम और त्याग की भावना का दीप जलाती है। जब ऐसी भावनाओं, आदर्शों तथा त्याग से तैयार हुए बालक समाज और देश की सेवा का व्रत धारण करके मैदान में उतरेंगे तथा अपने देश के लिए अपने जीवन को त्यागने से भी दूर नहीं हटेंगे, तो ऐसे समाज को उन्नति के मार्ग पर बढ़ने के लिए कौन रोक पायेगा। अतः हम कह सकते है कि शिक्षा का उद्देश्य मानव का विकास करना है तथा उसे सर्वश्रेष्ठ बनाना है। डॉ0 राधा कृष्ण ने भी कहा है कि – ''शिक्षा एक चाबी है, जो संसार की उज्ज्वलता के प्रति एक व्यक्ति की आँखें खोलती है।'' इसलिए जीवन के आदर्शों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण है। शिक्षा को शब्दों में बांधना मुश्किल है इस सन्दर्भ में केवल इतना कह देना ही सही होगा कि शिक्षा माता के समान पालन–पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्ग–दर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की तरह सांसारिक समस्याओं को खत्म करके प्रसन्नता प्रदान करती है।

मुख्य बिन्दु– परिवार, पारिवारिक संरचना, शिक्षा, समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि

परिचय –

परिवार में बूढे, जवान, पति–पत्नी तथा उनके बच्चे होते हैं। ये सभी एक–दूसरे से माता–पिता, भाई–बहन, दादा–दादी, चाचा–चाची अथवा किसी अन्य सम्बन्धों से बंधें होते हैं। इसे ही परिवार कहते है। पहले के समय में नौकरों को भी घर का सदस्य समझा जाता था, उसी आधार पर परिवार के अंग्रेज़ी शब्द 'फैमिली'' की उत्पत्ति 'फैमूल्स'' शब्द से मानी जाती है जिसका अर्थ है नौकर ;मतअंदजद्ध अर्थात घर में रहने वाले प्रत्येक सदस्य वह नौकर हो या मालिक, यदि मिलझुलकर, एकजुट होकर जीवन की गतिविधियों को ठीक से निभाते हैं तो उसे हम परिवार नहीं मन्दिर की संज्ञा देते है और उस मन्दिर रूपी परिवार में ही सबसे पहले बच्चा अपनी आँखे खोलता है, जहां बालक को प्यार और सुरक्षा मिलती है वही उसका पोषण तथा विकास होता है जो बालक के जीवन को प्रभावित करती है अर्थात् बच्चे की जीवन बगिया की सुंदरता को परिवार ही बनाता है। हम कह सकते है कि नवजात शिशु अपने जीवन की यात्रा परिवार से ही प्रारम्भ करता है तथा इसी संस्था में सुनना, उठना–बैठना, बोलना, चलना–फिरना तथा खाना–पीना जैसे सामाजिक आचरण की विधियाँ परिवार में ही सीखने को मिलती हैं। उसके ऊपर उसके माँ–बाप, दादा–दादी,

भाई–बहन के व्यवहार और भाषा का भी प्रभाव पड़ता है। यदि बालक अच्छा सुयोग्य चरित्रवान होता है तो हम कहते है कि यह बालक अच्छे परिवार से है, इसको संस्कार ही ऐसे मिले हैं, यह अच्छे परिवार से संबंधित है और अगर खराब होते है तो हम कहते हैं उसके संस्कार अच्छे नहीं है, वह अच्छे परिवार से सम्बन्ध नहीं रखता है अर्थात् जब तक बालक जीवित रहता है तब तक परिवार उसको प्रभावित करता है अतः हम मानते हैं कि परिवार के सदस्य, माता–पिता, दादा–दादी, भाई–बहन तथा अन्य रिश्तेदारों का सहयोग बालक के विकास में ठीक ढंग से होता है तो उसका विकास उचित दिशा में होता है तथा वह अपने जीवन के लक्ष्य को ठीक से प्राप्त कर लेता है और अगर ठीक नहीं होता है तो लक्ष्य प्राप्ति में कठिनाई होती है।

पारिवारिक सम्बन्ध

परिवारों में बालकों पर माता–पिता द्वारा अनुशासन के रूप में प्रतिबन्ध रखा जाता है। बालक अभाव की जिंदगी महसूस करता है। पारिवारिक स्थिति, वातावरण, बालक के विकास व स्थिरता में समय के साथ समायोजन करना सीख जाता जो सुविधा उच्च वर्ग में विद्यार्थी को मिलती है, वह सुविधा मध्यम वर्ग के परिवारों में कम होती है। विनम्रता, समर्पण, नैतिकता के गुण मध्यमवर्गीय परिवारों के बालक व बालिकाओं में होते हैं। मध्यवर्गीय समाज में माताओं का नौकरी–व्यवसाय आदि में कार्यरत होना परिवार के ढाँचे में एक अन्य परिवर्तन है। बच्चे माता के साथ अधिक समय नहीं गुजार पाते और शिशु भी बाहर शिशु सदनों की देखरेख में छोड़ दिये जाते हैं। आज स्थिति यह है कि बच्चों की शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति तो शायद पहले से अधिक अच्छे ढंग से हो जाती है किन्तु उनका हल्का प्यार, मान्यता, समर्पण, सुरक्षा आदि भी जो मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ हैं, वे कुंठित हो रही हैं।''

निम्न वर्ग के परिवार का वातावरण अभावों से भरा होता है। बालक–बालिकाओं में समायोजन करने की क्षमता कम विकसित होती है। बालकों में उत्तम संस्कार एंव मूल्यों के विकास पर, विद्यालय–वातावरण व सुसंस्कारित घरेलू वातावरण का प्रभाव पड़ता है। घर का अच्छा वातावरण बालक को समायोजन करने व अच्छी तरह विकास में सहायक होता है।

अच्छे संस्कारी परिवार द्वारा ही बालक में शैक्षिक उपलब्धि का विकास होता है। समाज को उससे बहुत अपक्षाएँ होती हैं। जीवन में आने वाली अनेक चुनौतियों का उसे सामना करना पड़ता हैं। अतः एकल एवं संयुक्त परिवार के बालक–बालिकाओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का प्रश्न शोधकर्त्री की दृष्टि में महत्वपूर्ण हो जाता है।

प्राचीन युग में संयुक्त परिवार की प्रथा थी। इन परिवारों में माता–पिता, भाई–बहन, चाचा–चाची, ताऊ–ताई, भतीजे–भतीजियाँ तथा दादा–दादी आदि सभी सदस्य एक साथ सम्मिलित रूप से रहते थे। इन परिवारों के बड़े सदस्य बालकों को समय–समय पर हर प्रकार की शिक्षा देते रहते थे। उस युग में केवल संयुक्त परिवार ही बालक की नैतिक, धार्मिक, व्यावसायिक तथा सामाजिक आदि सभी प्रकार की शिक्षा का केन्द्र माना जाता था।''

वर्तमान युग में संयुक्त परिवार का स्थान एकाकी परिवार ने ले लिया हैं। उसके अनेक कार्यों को भी उसकी सामाजिक संस्थाओं ने सम्भाल लिया है, पर इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि आधुनिक परिवार पर बालक के पालन–पोषण तथा शिक्षा का उत्तरदायित्त्व नहीं रहा है। वास्तविकता यह है कि परिवार एक ऐसा आधारभूत ढाँचा है, जिसका बालक की शिक्षा में अब भी महत्व कम नहीं हुआ है। आज बाल शिक्षा एकाकी हो गई है। आज का बालक क्या बोलना चाहता है, क्या कहना चाहता है, क्या सोचता है, क्या रचता है, कैसे रंगों का संयोजन करता है, कैसे संगीत के स्वर से अपने जीवन में एक नई लय का सृजन करता है। इन सबको सुनने समझने का समय विद्यालयों, शिक्षकों और अभिभावकों को नहीं है।

एकल परिवार में बालक उदास मन से रहता है। लेकिन संयुक्त परिवार में दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ–ताई आदि के साथ रहते तो बालक की परवरिश भी अच्छी होती है, बालक में सम्पूर्ण नैतिक मूल्यों का विकास होता है जिससे बालक का विकास अच्छा होता है। बालक पूर्ण रूप से परिवार के साथ समायोजन करना सीख लेता है। एक व्यक्ति जिस प्रकार से अपना प्रत्यक्षीकरण करता है अथवा जिस ढंग से अपने को देखता है, उसे ही हम उस व्यक्ति का

समायोजन कहते हैं। संयुक्त परिवार के बालकों में समायोजनशीलता अच्छी होती है। जो बालक समायोजित होता है तो शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी होती है।''

छात्र–छात्राओं को समायोजन स्थापित करने के लिए उचित निर्देशन की आवश्यकता महसूस होने लगती है। बालक के लिए परिवार की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि बालक अपने जन्मकाल से ही परिवार में रहता है और उसके व्यक्तित्व के निर्माण में परिवार का वातावरण स्वस्थ हो तो बालक एक अच्छा नागरिक बनता है और यदि परिवार का वातावरण दूषित होगा तो उसकी समायोजन क्षमता का स्तर निम्न होगा। संयुक्त परिवार के बालक में संस्कृति व नवीन परम्पराओं का विकास होता है। बालक के सर्वांगीण विकास के लिए संयुक्त परिवार का होना अत्यंत आवश्यक है।''

परिवार का बदलता स्वरूप :–

वैज्ञानिक और आधुनिकीकरण के युग के कारण आज परिवार का स्वरूप बदलता जा रहा है तथा इस बदलते स्वरूप में हमारी इच्छाएं असीमित होती जा रही है और इस असीमिता में हमारे परिवारों के स्वरूप में परिवर्तन आता जा रहा है। पहले बच्चों को जो शिक्षा घर, परिवार से मिलती थी, अब वो शिक्षा मिलनी कठिन होती जा रही है, क्योंकि घर में बच्चे की वह शिक्षा तभी सम्भव है जब उनके सदस्यों के बीच प्रेम, सहानुभूति, स्नेह हो तथा वे साक्षर और शिक्षित हो, सभ्य एवं सुसंस्कृत हो तथा चरित्रवान हो। आज के समय में तो यह भी जरूरी हो गया कि अगर माता–पिता को बच्चे की बाल प्रकृति का ज्ञान हो तो सोने पे सुहागा वाली बात होगी साथ ही उनका अपने बच्चों की शिक्षा तथा उनमें मूल्यों का विकास करना तो मूलभूत आवश्यकता है, परंतु आज हमारे देश में परिवारों की दशा में भारी परिवर्तन हो रहा है और यह परिवर्तन का ही नतीजा है कि भारतीय परिवारों में गुणों की कमी होती जा रही है। पारिवारिक सम्बन्ध टूटते जा रहे हैं। परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम और सहानुभूति नाम की चीज ही नहीं रही जो कि एक परिवार में होनी चाहिए। इनका कारण हम पश्चिमीकरण, औधोगिकरण तथा आर्थिक दबाव कह सकते है, क्योंकि आज हमारी आवश्यकताओं का बढ़ जाना तथा विदेशों की देखा–देखी ऐशो विलासता आराम की जिन्दगी के कारण खर्चे बहुत अधिक बढ़ गए हैं जिसके कारण इतनी नौबत आ गई है एक आदमी की कमाई से काम नहीं चलता है, इसलिए कमाई के लिए पति–पत्नी दोनों को नौकरी करनी पड़ती है। ऐसी स्थिति में वे बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते तथा बच्चे अपने को उपेक्षित महसूस करते है। वे माँ–बाप के प्रेम से वंचित रहने के कारण हर वक्त क्रोध और आक्रोश में रहते हैं। उनमें विद्रोह की भावना पनपती रहती है। वे तनाव में घिरे रहते हैं। उनमें हर वक्त असुरक्षा की भावना बनी रहती है, तो ऐसे बदलते स्वरूप को देखकर हम बच्चें को कैसे मूल्यवान बना सकते हैं। कैसे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ा सकते है। यह कठिन ही नहीं नामुमकिन भी है, परन्तु इस असम्भव कार्य को सम्भव बनाने के लिए परिवार की सबसे बड़ी विशेषता है प्रेम, विश्वास और सहयोगपूर्ण वातावरण प्रदान करना। प्रेम, विश्वास, सहयोगपूर्ण वातावरण तीनों यदि एकत्रित हो जाते हैं तो बच्चे का विकास स्वाभाविक होता है।

समायोजन का अर्थः–

समायोजन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। जीवित अवयव साधारण से जटिल अवस्था में निरन्तर समायोजन का प्रयास करता है। इस समायोजन का सम्बन्ध प्राणिशास्त्रीय आवश्यकताओं जैसे–भूख तथा प्यास की संतुष्टि से सम्बन्धित होता है अथवा मानवीय स्तर पर मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं जैसे– सम्बन्ध स्थापना की इच्छा, प्रेम तथा वात्सल्य प्राप्त करने की इच्छा या रचनात्मक आत्म प्रदर्शन के अवसर प्राप्त करने की इच्छा पूर्ति से होता है।

समायोजित व्यक्ति सामाजिक परिस्थितियों तथा दशाओं को पर्यावरण में इस प्रकार समायोजित करने का प्रयत्न करते हैं जिससे क्रियाओं के प्रतिदिन के कार्यक्रम सरलता से चल सकें।

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ :–

शैक्षिक उपलब्धि व्यक्ति अपने जीवन में विभिन्न क्रियाओं के द्वारा अनेक प्रकार का ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करता है। वह ज्ञान एवं कौशल उसकी उपलब्धि कहलाती है। उपलब्धि परीक्षण वह अभिव्यक्ति है जो एक विशेष पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ एवं कुशलता का मापन करता है। इसका निर्माण विशेष शैक्षिक उपलब्धि के

प्रभाव को जानने में किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि से आशय बालक द्वारा विद्यालय में अध्ययन किये जाने वाले विभिन्न विषयों से संबंधित आयोजित परीक्षाओं में प्राप्तांकों से है। शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ और कुशलताओं का मापन करता है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का वह मूल्यांकन है जो विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयास एवं उनके स्तर व आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति से अभिव्यक्त होता है।

अध्ययन का औचित्य :–

पारिवारिक संस्था समय, काल, देष व परिस्थितियों से प्रभावित होती है जिसके कारण भिन्न–भिन्न संस्कृतियों में परिवारों के स्वरूप व मान्यताओं में अन्तर पाया जाता है। पश्चिमी समाजों में जहां परिवार की तुलना में व्यक्ति को अधिक महत्त्व दिया जाता है। वहीं पूर्वी देशों में परिवार को अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। आधुनिक समय में यद्यपि हमारे भारतीय समाज की पारिवारिक संरचना में फेरबदल हो रहा है, फिर भी हमारी भारतीय संस्कृति, परम्परागत विचारों व जीवन शैली का महत्त्व कम नहीं हुआ है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक के अनुसार विद्यार्थियों के परिवार का स्वरूप, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि उसके सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करती है।

समस्या कथन :–

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पारिवारिक संरचना का उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव – एक तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. एकल परिवार के छात्र –छात्राओं के समायोजन की समस्या का अध्ययन करना ।
2. संयुक्त परिवार के छात्र –छात्राओं के समायोजन की समस्या का अध्ययन करना।
3. एकल परिवार के छात्र –छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।
4. संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
5. एकल व संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन की समस्या और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

परिकल्पनाएं :–

H_1 एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H_2 संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H_3 एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H_4 संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H_5 संयुक्त और एकल परिवार के विद्यार्थियों के समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है।

शोध–विधिः–

इस अध्ययन में अनुसंधान की वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

न्यादर्श– इस शोध में 11वीं कक्षा के कुल 200 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया जाएगा जिसमें 100 सरकारी (50 छात्र, 50 छात्राएं) व 100 गैर सरकारी (50 छात्र 50 छात्राएं) विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाएगा।

आंकड़ों का विश्लेषण

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 02 | April - June 2023

H_1 एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या – 1 एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना

न्यादर्श	संख्या	माध्य	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
छात्र	100	12.24	2.53	4.6	–	सार्थक अन्तर हैं
छात्राएं	100	13.41	2.61			

उपर्युक्त तालिका संख्या 1 में एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया। इनके मध्यमान क्रमशः 12.24 एवं 13.41 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमशः 2.58 एवं 2.61 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रांन्तिक अनुपात मान (C.R.Value) 4.6 प्राप्त हुआ है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर अधिक है, अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर कहा जा सकता है कि एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर है।

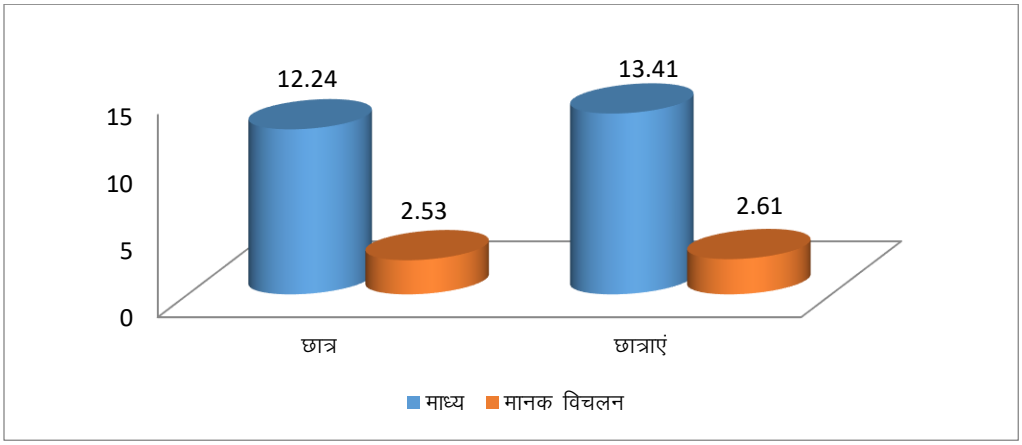

लेखाचित्र 1

H_2 संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या – 2 संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं में समायोजन के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना –

न्यादर्श	संख्या	माध्य	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
छात्र	100	14.40	3.19	3.21	–	सार्थक अन्तर हैं
छात्राएं	100	15.55	3.91			

उपर्युक्त तालिका संख्या 2 में एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया। इनके मध्यमान क्रमशः 14.40 एवं 15.55 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमशः 3.19 एवं 3.91 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रांन्तिक अनुपात मान (C.R.Value) 3.21 प्राप्त हुआ है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर अधिक है, अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर कहा जा सकता है कि एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर है।

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 02 | April - June 2023

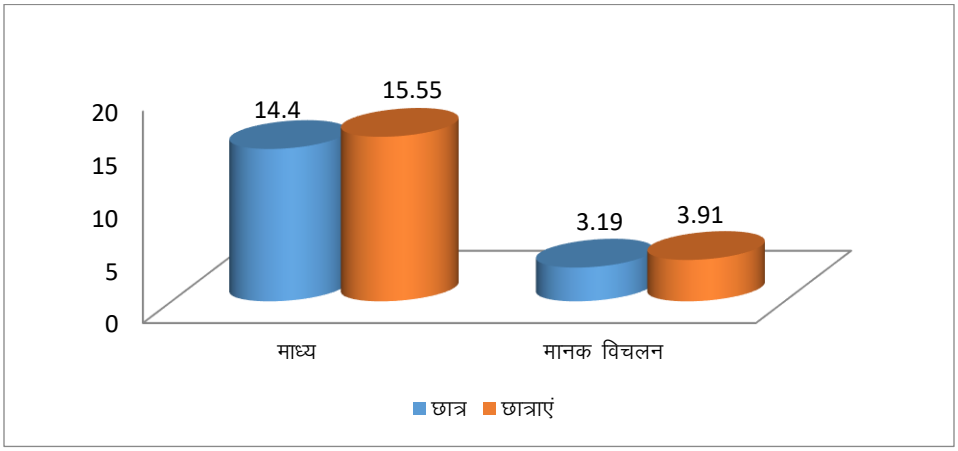

लेखाचित्र 2

H 3 एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या – 3 एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना –

न्यादर्श	संख्या	माध्य	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
छात्र	100	620.37	52.56	3.52	–	सार्थक अन्तर हैं
छात्राएं	100	681.69	54.92			

उपर्युक्त तालिका संख्या 3 में एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया। इनके मध्यमान क्रमशः 620.37 एवं 681.69 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमशः 52.56 एवं 54.92 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रांन्तिक अनुपात मान (C.R.Value) 3.52 प्राप्त हुआ है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर अधिक है, अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर कहा जा सकता है कि एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

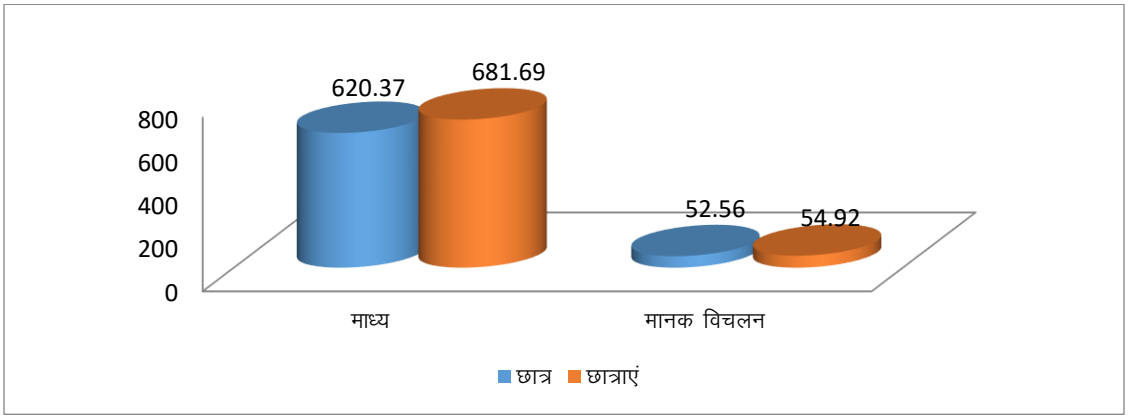

लेखाचित्र 3

H 4 संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या – 4 संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना –

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 02 | April - June 2023

न्यादर्श	संख्या	माध्य	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
छात्र	100	515.26	39.53	1.57	सार्थक अन्तर नहीं हैं	–
छात्राएं	100	675.15	51.25			

उपर्युक्त तालिका संख्या 4 में संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया। इनके मध्यमान क्रमशः 515.26 एवं 675.15 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमशः 39.53 एवं 51. 25 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात मान (C.R.Value) 1.57 प्राप्त हुआ है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर कम है, अतः यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत कर कहा जा सकता है कि संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

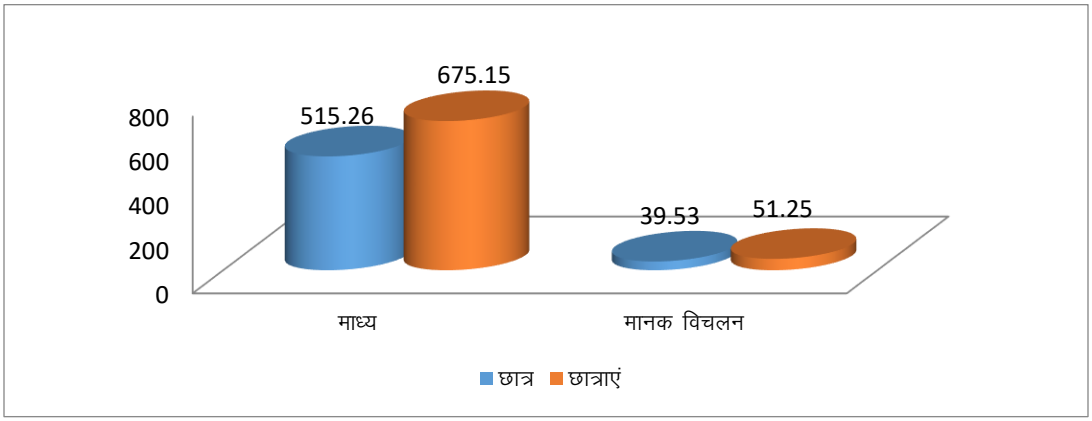

लेखाचित्र 4

H_5 संयुक्त और एकल परिवार के विद्यार्थियों के समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है।

तालिका संख्या – 5 संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांको के मध्य सहसम्बन्ध की गणना

मापनियाँ	संख्या	सहसम्बन्ध मान
समायोजन	100	0.014
शैक्षिक उपलब्धि	100	

उपर्युक्त तालिका में संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्य सहसम्बन्ध की गणना की गई है जिसके अनुसार सहसम्बन्ध गुणांक 0.014 है अर्थात् निम्न धनात्मक सम्बन्ध पाया गया है। अतः विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में वृद्धि होने पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि के स्तर में भी निम्न स्तर की वृद्धि होती है।

तालिका संख्या – 6 एकल परिवार के विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांको के मध्य सहसम्बन्ध की गणना

मापनियाँ	संख्या	सहसम्बन्ध मान
समायोजन	100	0.039
शैक्षिक उपलब्धि	100	

उपर्युक्त तालिका में संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्य सहसम्बन्ध की गणना की गई है जिसके अनुसार सहसम्बन्ध गुणांक 0.014 है अर्थात् निम्न धनात्मक सम्बन्ध पाया गया है। अतः विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कमी होने पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि के स्तर में भी निम्न स्तर की कमी होती है।

निष्कर्षः– शोधकर्ता ने अपने शोध की धारणाओं में इस तथ्य को पूर्णतया निराधार सिद्ध किया है। यह धरातलीय सत्य है कि विद्यार्थी को समाज की मुख्य इकाई के रूप में देखा जाये तो वे निश्चिय ही राष्ट्रीय एवं मानवीय जीवन दर्शन के पूर्ण संवाहक हो सकते हैं। छात्रों के दोनों वर्ग चाहे वह एकल परिवार के हो या चाहे संयुक्त परिवार के, उनकी सामाजिक एवं मानवीय संवेदना के सभी पक्षों का निर्देशन होना चाहिए। यह शोध शिक्षा की दुनिया में थल–पुथल मचाने वाला नहीं परन्तु इतना निश्चित है कि विद्यालयों एवं अभिभावकों, दोनों में व्याप्त उपर्युक्त धारणा को निर्मूल सिद्ध करने वाला होगा। इस अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रायः ऐसे संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण पक्ष पर किसी प्रकार का पाठ्यक्रम नहीं दिखाई देता। बालक पुस्तकों की दुनिया में खोया रहता है। उसे बाहरी समाज का बोध कम हो पाता है।

संदर्भित ग्रंथ सूची

(I) हिन्दी सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. ढोढियाल, एस. पाठक (1990). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ संख्या–51
2. कपिल, एच के. (1979). अनुसंधान विधियाँ, आगराः द्वितीय संस्करण, हरिप्रसाद भार्गव हाऊस. पृष्ठ संख्या–23
3. कोठारी, सी.आर. (2008). अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी, आगराः न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेषन कारपोरेशन. पृष्ठ संख्या–2
4. गुप्त, नत्थूलाल (2000). मूल्य परक शिक्षा और समाज. नई दिल्लीः नमन प्रकाशन. पेज–122
5. गौड़, अनिता (2005). बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे. नई दिल्लीः राज पाकेट बुक्स. पृष्ठ संख्या–14
6. चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ (2005). पारिवारिक सुख के लिए हैः किशोर मन की समझ. नई–दिल्लीः श्रीविजय इन्द्र टाइम्स अंक–8, पृष्ठ संख्या–25
7. चौबे, सरयू प्रसाद (2005). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठः इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस. पेज न.184
8. चौहान, एस.एस. (1996). सर्वांगीण बाल विकास. नई दिल्लीः करोल बाग आर्य बुक डिपो. पेज प. 591
9. जायसवाल, सीताराम (1994). शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्लीः करोल बाग. आर्य बुक डिपो मंदिर पेज 221
10. ढोढियाल, एस. पाठक (1990). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ संख्या–51
11. पाठक, पी.डी. (2007). शिक्षा मनोविज्ञान. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर. पृ.सं. 245, 552,450
12. पारीक, प्रो. मथुरेष्वर (2005). उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा . जयपुरः शिक्षा प्रकाशन. पेज 22
13. प्रकाश, जी. (1995). सांस्कृतिक एवं नैतिक शिक्षा . नई दिल्लीः शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार. पृश्ठ संख्या–27
14. भटनागर, आर.पी.(1973). शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगराः द्वितीय संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या–107
15. भटनागर, सुरेश (1996). शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्याएं. मेरठः सूर्या पब्लिकेशन. पृ. स. 440.
16. भटनागर, सुरेश (2009). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठः लायल बुक डिपो. पृष्ठ संख्या–153
17. भार्गव, ऊषा (1993). किशोर मनोविज्ञान. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ संख्या–99
18. भार्गव, महेष (2007). आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण+मापन. आगराः एच.पी.
भार्गव बुक हाउस. पेजः– 463–64,526
19. माथुर, एस.एस. (2008). शिक्षा मनोविज्ञान. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या–55,76,421.425

शब्द कोष और एनसाईक्लोपीडियाकोश की सूची :
1. नालन्दा शब्द कोश (1991). आदर्श बुक डिपो. नई दिल्लीः पृष्ठ संख्या–627
2. सहाय, राजवल्लभ एवं. श्रीवास्तव, मुकन्दीलाल (2009). वृहद हिन्दी शब्द कोश .
बनारसः ज्ञान मण्डल लि. पृश्ठ संख्या–713

हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं की सूची :–

1. अखण्ड ज्योति. जनवरी 2004. बुद्धि को प्रखर बनाने के कुछ साधन. पृ. स. 25–26.
2. दवे, इन्दु 4 मई 2006. दैनिक जागरणः भावना और संवेग बालक की दुनियां. पृ. स. 110.
3. दैनिक जागरण. 10 जून 2008. लखनऊ सप्तरंग परिशिष्ट. सामंजस्य सूत्र. पृ . स. – 03.
4. युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि. मथुराः अप्रैल 2007. प्रतिभा पाई नहीं कमाई जाती है. पृ. स. 6.
5. युग निर्माण योजना. गायत्री तपोभूमि, मथुरा. नवम्बर 2007. स्वाध्याय बिना प्रगति नहीं पृ. स. 23–24
6. युग निर्माण योजना, अगस्त 2007 गायत्री तपोभूमि, मथुराः किशोरों के निर्माण में सावधानी बरतें. पृ. स. 25–26

List of Journal & Surveys:-

1. Bhartiya Shiksha Shodh Patrika, Indian Institute of Education Research. Indian Institute of Research. Lucknow: Vol- 19 (2) Jan-June (1984) P25.
2. DEIFOERA. Ineugural issue. January, 2008. Page No.14
3. Dissertation Abstracts International: The Humanities and social science. volume 57, 58. No.1-12 (1997).
4. Dissertation Abstracts International: The Humanities and social science. (2009). vol.69,70 No.1-10
5. Higher Educational Research And Development. Vol.-19,Issue Oct.1997 Page 523-539
6. Indian Journal Of Educational Research. Vol.-20,23,24,28 5. Journal of The Indian Academy of Applied Psychology. January 1998 Vo.14, No.-1 Page 43-46
8. 8. Indian Psychological Review. Jan. Vol. 5 No. 2, (2002) 164
9. M. Ed./Ph.D. Reported (1960-1982). Jaipur: Uni. of Rajasthan. P- 122
10. Pergaman international journal of educational research. (2000). volume 3
11. Research in Education: in Rajasthan Education Depot. Rajasthan:. Bikaner. P- 170.
12. Sharma, S.K. (1998-2003). Sixth Survey of Educational Research. NCERT Vol. -I, II New Delhi: